R.N.I.-
UPHIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

डॉक्टर संगीता बनाफ़र अंक

वर्ष 25 | अंक 6 | रविवार, इलाहाबाद, 29 जून 2025 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार डॉ.संगीता बनाफ़र

उमेश श्रीवास्तव

मात-पिता की परम दुलारी ,

संगीता है नाम ।

काम कर रही अच्छा-अच्छा ,

सच्ची है इंसान ।

तो बात हो रही है छत्तीसगढ़ की डॉक्टर संगीता बनाफ़र की । बचपन से ही पिता की प्रेरणा से लिखना आरंभ किया। नित नए-नए विचारों से लबरेज कवयित्री डॉक्टर संगीता बनाफ़र की कविताओं में जीवन की सच्ची झल क मिलती है । जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव को अनुभव करती हुई डॉक्टर संगीता बनाफ़र आज एक जाना पहचाना नाम है। कई संस्थाओं से जुड़ी डॉक्टर संगीता बनाफ़र की कविताओं की बानगी देखिए

पहली बानगी

स्त्री .. सिर्फ सौंदर्य का पर्याय नहीं

स्त्री.. सिर्फ श्रृंगार का अभिप्राय नहीं

स्त्री ...सिर्फ तन का अध्याय नहीं

स्त्री है.. प्रेम .. करुणा.. शौर्य .. सृजन.. समृद्धि..

दूसरी बानगी

मैं सृजन हूं,

सृष्टि से ऊपजी

सृष्टि के विधाता ने रचा है

तीसरी बानगी

ना कूरेदो मेरे लहू को एक कराह उठती है..

न छेड़ो मेरे अस्तित्व को दिल सेआह उठती है ..

हूं तप्त धरा अंगारों सी आग धधक रही..

ना कुचलो मेरे सपने जीने की चाह उठती है ..

डॉक्टर संगीता बनाफर की इसी प्रतिभा के चलते उन्हें जून माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान दिया जा रहा है । संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है । अंक कैसा लगा , प्रतिक्रिया जरुर दें ।

अंत में

लिखने वाले ने लिख डाला ,

कविता और कहानी ।

संगीता की बात अलग है ,

वह लिखती जगती की बानी ।

उमेश श्रीवास्तव

मेरी लेखन यात्राः सपनों को मिली उड़ान

डॉ. संगीता बनाफ़र

'मेरी कलम से ,विध्वंस नहीं ..
सृजन का साक्षात्कार हो ,
सूर्योदय कीआभा लिए ..
युग निर्माण का आधार हो,
लज्जित हो ना किंचित मुझसे..
मेरे देश की माटी
मेरे प्रति-शब्द, मां शारदे की.. प्रतिलिपि,
मेरी प्रति-रचना, मां भारती का.. श्रृंगार हो'।।

मैं अपनी लेखनी को मां बागेश्वरी का वरदान और अपने माता-पिता के आशीर्वाद का प्रसाद मानती हूं. मुझे अब लगता है कि मेरे जन्म से पहले ही मेरे मम्मी-पापा ने अपने सपनों के आकाश की परी बनाकर मेरी महत्वाकांक्षाओं को पंख दे दिए थे, लेकिन शायद मैं समय रहते उनके आकांक्षाओं और स्वयं की अहमियत को पूरी तरह से समझ नहीं पाई और उन पंखों को उड़ान नहीं दे सकी. आज जब मैं आसमान छूने चली हूं, तो वे इस दुनिया में नहीं हैं. निश्चित ही वह आकाश पटल स मुझे आशीर्वाद दे रहे होंगे।

बचपन से ही पापा मुझे लिखने के लिए प्रेरित करते थे. मैं छोटी-छोटी कविताएं लिखती थी, जिन्हें पापा 'चंपक' में भेजा करते थे. तब मुझे इसका मतलब भी नहीं पता था. 15 अगस्त और 26 जनवरी पर मैं फिल्मी गानों की तर्ज पर अपने शब्दों में कविताएं बनाती थी और पापा बहुत खुश होते थे. यूं ही वक्त बीतता गया.

जब मैं कॉलेज में आई, मुझे चार-चार लाइन की शायरी लिखना अच्छा लगता था ,सरिता' पत्रिका के कॉर्नर में एक-दो बार मेरी शायरी को जगह भी मिली. मेरी पूरी डायरी इन चार-चार पंक्तियों की शेर-ओ-शायरी से भरी होती थी, लेकिन पता नहीं अब वे कहां हैं.।

फिर मैंने जॉब की और बाद में शादी हो गई. मेरी जिंदगी बहुत खुशहाल थी. पारिवारिक जिम्मेदारियों और बच्चों के साथ मेरा बचपन हंसते-खेलते गुजरा और कलम से मेरी दूरियां बढ़ती गईं. मैंने इसे कभी गंभीरता से लिया ही नहीं.

जब मेरे दोनों बच्चे 12वीं के बाद बाहर पढ़ने चले गए और पति अपने व्यवसाय में व्यस्त रहने लगे, तो मुझे बहुत अकेलापन महसूस होने लगा. बस, फिर मैंने उसी अकेलेपन को दूर करने के लिए कलम को अपना साथी बना लिया. खाली वक्त में कभी कविताएं लिखती, कभी आलेख और इसमें मुझे बहुत मजा आने लगा. मैं फेसबुक के कई साहित्यिक मंचों से जुड़ गई और जब मैं अपनी कविताएं वहां भेजती थी, तो लोग उन्हें बहुत पसंद करते थे. मुझे कई मंचों से ऑफर भी मिलने लगे और लोग मुझे एक लेखिका के तौर पर जानने लगे. मैंने कई कविताएं लिखीं, पर तब भी मैं इसे गंभीरता से नहीं लेती थी.

एक दिन मैं किसी परिचित के यहां पुस्तक विमोचन में गई. मुझे भी वहां आमंत्रित किया गया था, क्योंकि वे जानते थे कि मैं लिखती हूं. वहां मैंने अपनी कविता का पाठ किया. मेरी कविता सब लोगों को बहुत पसंद आई. इसी दौरान राजभाषा आयोग के अध्यक्ष और छत्तीसगढ़ के साहित्य सम्राट डॉ. विनय पाठक ने भी मेरी कविता सुनी और उन्होंने मुझे अपना नंबर दिया. जब मेरी उनसे बात हुई, तो उन्होंने पूछा, 'आपने कितनी कविताएं लिखी हैं?' मैंने कहा, 'सर, डेढ़-दो सौ कविताएं होंगी.' उन्होंने कहा, 'मुझे अपनी कविताएं दिखाइए.' मैंने उन्हें अपनी कविताएं भेजीं. उन्हें मेरी कविताएं बहुत पसंद आईं. उन्होंने कहा, 'आपकी कविता उत्कृष्ट कोटि की है, आप बुक पब्लिश करवाइए.'

मैंने बहुत मेहनत की और कुछ और अच्छी कविताएं लिखने की कोशिश की. मेरा पहला काव्य संग्रह, ' संगिनी,' जिसमें 181 कविताएं हैं, प्रकाशित हुआ. पुस्तक विमोचन के समय न्यायमूर्ति चीफ जस्टिस श्री चंद्रभूषण बाजपेई ने मेरी पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा, 'मैं आपको उच्च कोटि की कवयित्रियों में देख रहा हूं.' उन्हें मेरी कुछ कविताएं इतनी पसंद आईं कि उन्होंने अटल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. अरुण वाजपेयी सर से ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए अनुमोदन करने निवेदन किया, यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी, क्योंकि मैंने तो स्व मूल्यांकन किया ही नहीं , ना मुझ में इतनी समर्थता थी, जो सपने मम्मी पापा ने बुने थे ,जो उन्होंने अपने विचार सिंचन से मुझे पल्लवित किया था, वह पूरे हो आकार ले रहे थे, मैं स्वयं विश्वास नहीं कर पा रही थी मेरी आंखें भीग गई थी , काश मम्मी पापा होते और यह सब देख पाते।

इसके बाद साहित्य के प्रति मेरा प्रेम और लि खने-पढ़ने की मेरी ललक बढ़ती गई ,मेरे जीवन साथी और मेरा परिवार सदैव मेरा साथ देते रहे. अच्छे साहित्य पढ़ना और उच्च कोटि के साहित्यकारों से मिलना सदैव मुझे प्रेरणा देता है और मुझे ऊर्जा से भर देता है । अब तक मेरी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । अब यह जीवन साहित्य सेवा के लिए समर्पित है ,आज मैं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान प्राप्त कर चुकी हूं। जिसके लिए सदैव मां शारदे को हृदय से नमन करती हूं। मेरी अनुभूति में तो अब यात्रा प्रारंभ हुई है ,मुझे सतत साधनारत रहना है। अभी-

इस विराट विश्व में ,परिचय है लघुता मेरी,
मैं वृहद - वृंद नहीं, सूक्ष्म है क्षमता मेरी '।

मैं अपनी सभी बहनों से कहना चाहती हूंः ईश्वर ने हमें प्रतिभावान बनाया है. हमें आत्म आकलन कर प्रतिभा को समय रहते पहचानना चाहिए और स्वयं को एक सम्मानित पहचान देनी चाहिए. साहित्य एक ऐसी साधना है जो हमारी दशा और दिशा दोनों बदल देती है हमें मानवीय मूल्य देकर भारतीय संस्कृति और संस्कारों से जोड़ती है हमारी दशा और दिशा दोनों बदल देती है मानवीय मूल्य देकर हमें उन्नयन के मार्ग पर ले जाती है, लोग हमें सारस्वत साधक के रूप में देखते हैं और समाज को हम एक नई सकारात्मक दिशा दिखा सकते हैं , हम सभी महसूस करते हैं कि -

'जरुरत आन पड़ी फिर से, सभ्यता, संस्कृति, संस्कार की
बेकल है ,भ्रमित है मानव, वक्त है त्वरित उपचार की'।।

कविताएं

स्त्री को स्त्री रहने दो

स्त्री .. सिर्फ सौंदर्य का पर्याय नहीं
स्त्री.. सिर्फ श्रृंगार का अभिप्राय नहीं
स्त्री ...सिर्फ तन का अध्याय नहीं
स्त्री है.. प्रेम .. करुणा.. शौर्य .. सृजन.. समृद्धि..
स्त्री को.. सतत .. सहज ..सरिता सी
उन्मुक्त हवा बन बहने दो ...
स्त्री को स्त्री रहने दो....

स्त्री व्यथित हो तो
संवेदना के कण नयन में अश्रुधार बन जाते हैं
उपेक्षित..अपमानित वेदना से मन
तार-तार हो जाते हैं
ना जकड़ो उसे जंजीरों से
सरगम बन सप्त सुरों में बहने दो
स्त्री को स्त्री रहने दो.....

स्त्री काअंतर्मन स्वतः सुगंधित
शुद्ध चंदन है
उसके मर्यादित कर्म ही उसके
आभूषण है
स्त्री कुरूप या असुंदर नहीं मन
से श्वेत हिमकण है
समझो उसका दृष्टिकोण
हर वक्त ना खुद को प्रमाणित करने दो
स्त्री को स्त्री रहने दो...।।

प्रार्थना

ईश्वर मैंने तुझको पा लिया
तू मेरी अटल सत्यनिष्ठा है
तभी तो मेरे कलम से निकले
हर शब्दों में तेरी प्राण प्रतिष्ठा है ।।

क्यों ढूंढू बाहर तुझे
जब तुझसे ना मेरी दूरी है
मैं वह मलंग मृग नहीं
जो बाहर ढूंढे अपनी कस्तूरी है ।।

क्यों पूजूं दिन-रात तुम्हें
तुम तो मेरे हर कर्म में हो
श्रद्धा हो, विश्वास हो
जीवन के हर मर्म में हो ।।

क्यों साबित करूं आस्तिकता
मेरा अस्तित्व ही तेरा प्रमाण है
मैं तुच्छ कैसे समझूं खुद को
मेरी रचना तेरा ही तो परिणाम है।।

मैं सारथी....

मैं सारथी.. अपने जीवन के महाभारत की
मुझे खुद ही कृष्ण
और अर्जुन बनना है
क्यूं सुनाऊं किसी को व्यथा..कथा
जब रणभूमि में योद्धा बन अकेले ही लड़ना है...

मेरी कर्मभूमि ही मेरे युद्ध का मैदान है
ईश्वर प्रदत्त शक्ति और
सामर्थ्य मुझ में विद्यमान है
क्यों डरूं पथ कंटको से
जब विजयपथ में सशक्त बन अकेले ही चढ़ना है...

मैं हिंदुस्तान की बेटी हूं
रगों में वीरांगनाओं की
लहू का रफ्तार है
बना दूंगी कलम को क्रांति का शमशीर
जब इतिहास में अपनी कहानी अकेले ही गढना है ।।

प्रिये...

मैं जब भी तुमको लिखने बैठी..
सस्मित हृदय प्रेम की बातें..
सुध बुध विस्मृत हो जाती..
अलंकृत हो उठती मेरी रातें..

तुम प्रतिबिंबित होते तारों में..
कभी सघन मेघ छिप जाते..
अमृत की बूंदे बनकर ..
मुझे सारी रात भीगाते...

पथ में बिछ जाते बन सुमन
स्नेहिल स्पर्श दे जाते..
तन मन देती सर्वस्व वार..
जब मंद मंद मुस्काते..

मेरे रग रग में संगीत भर..
संग सप्त सुरो में गाते..
पलकों के बिछोने मे आ..
संग सपने मधुर सजाते..

बस..ढाईआखर लिख पाती..
तुम पूर्ण विराम बन जाते..
जीवन रेखा बनकर ,प्रिये..
मुझको जीवन दे जाते।।

'समर्पण '

हे कृष्णा ...
तुम ही तो सृष्टि हो ..
फिर भी सृष्टि में तुम्हारा ..
बाल रूप में आना ..
बांसुरी बजाना ..
गैया चराना ..
रास रचाना...
यह सब तो एक बहाना था..
तुम्हें तो..
आदि से अनंत तक थलचर..
जलचर नभचर..
पादपऔर पाषाण को प्रेम सिखाना था..
तभी तो हर कोई ...
कृष्णा का दीवाना था..
और ऐसी दीवानगी...
जो ...मीरा की पीर..
जमुना की नीर..
और ..
राधा की तकदीर.. बनी
कृष्णा..तुम्हारी प्रीत ने सिखाया..
सिर्फ पा लेना ही प्यार नहीं ...
प्यार तो समर्पण है...
तभी तो हर दिल में तुम्हारी ही मूरत है ....
और आज भी ...
कृष्णा...
तू ही तो ...
सांसो की जरूरत है...।।

स्वयमेव .....

स्वयमेव तुझे कैसे संवारू
कैसे अमरत्व का संसार दूं
मैं शून्य..... मैं नगण्य
कैसे तुझे वृहद विस्तार दूं
स्वयमेव .....

उर तिमिरमय पथ तिमिरमय
कैसे उर्जा का संचार दूं
मैं टिमटिमाती लौ दिए की
कैसे रोशनी का अधिकार दूं
स्वयमेव ...

पलकसीपी में अश्रु भरे हैं
कैसे अधरों पर हंसी वार दूं
भावनाएं कुत्सित हो चली हैं
कैसे स्नेह का मनुहार दूं
स्वयमेव ...

मैं जकड़ी सीमा रेखाओं में
तुझे कैसे असीम स्वाधिकार दूं
तू चांद छूने को आतुर है
मैं कंटबिंधे कदमों को कैसे रफ्तार दूं
स्वयमेव .....

तेरे चंचल सपने भोले है
कैसे मैं कुंठित, कल्प साकार दूं
तू सुरभित पुष्प सी रंगभरी
कैसे मैं मलिन, बासंती बहार दूं

स्वयमेव तुझे कैसे संवारू ...
कैसे अमरत्व का संसार दूं....

मैं जीवन ...

मैं..तिमिर के घटाटोप में, आशा के दीप
जलाना चाहती हूं
मैं..अश्रु नयन लिए अंतर्मन, से प्रेम के
गीत गाना चाहती हूं..

मिट मिटकर जो मिट ना सकी, ऐसी
शाश्वत देह लिए
बन नव अंकुर हर युग में, नव संसार
बसाना चाहती हूं..

मैं..पारद सी चंचल मैं..मधुबन
मैं.. उपवन
मैं पाषाण में भी प्राण भर, सपने
सजाना चाहती हूं..

मैं..ढूंढती अपनी निशां सृष्टि के
प्रारब्ध में
लुप्त अवचेतन चेतनाओं को फिर से
बुलाना चाहती हुं..

मैं सदैव सबकी संगिनी,
आदि से अनंत
तक
चीरपरिचित, स्वपरिचय फिरभी
बताना चाहती हूं..

हां.. मैं जीवन हूं ..
हर जीवनी को रचती
प्रति जिंदगी को मैं.. कालजयी
उपहार बनाना चाहती हुं ।।

मृत्यु को अभी हराना है..

अभी विराम हरगिज नहीं..
मृत्यु को अभी हराना है..

अभी तो बिगुल बजा है
प्रारब्ध के प्रारंभ का
नव चेतना का शंखनाद
नई सुबह के शुभारंभ का
अभी तो जीवनरथ में चढ़कर
बन हिमालयश्रृंग शिखर पर
विजय पताका फहराना है

अभी विराम हरगिज नहीं ...
मृत्यु को अभी हराना है.....

अवशेष रहे ना कोई मन में
द्वेष रहे ना हृदय कमल में
नवयुग का नवनिर्माण बन
निज नूतन प्रेम प्रवाह बन
प्रेम का दीप जलाना है

अभी विराम हरगिज नहीं...
मृत्यु को अभी हराना है

भरेंअश्रु नयन विकल्प नहीं
सीचें अमृत लें संकल्प यही
बन क्रांति का सपन मृदुल

अभिमन्यु सा नव वृहद वृंद
एकलव्य सा इतिहास बनाना है

अभी विराम हरगिज नहीं...
मृत्यु को अभी हराना है..
अनसुलझे से सवाल

क्या कहें ....??

कुछ अनसुलझे से सवाल
कुछ अनकहे से जवाब
कुछ सामाजिक दुर्दशा
कुछ स्त्री की खामोश मनोदशा
क्या कहें...??
अक्सर मन को कुरेद जाती है
इसका जिम्मेदार स्त्री चुप्पी है
या सदियों से चली आ रही
स्त्री की पुरुष से दासिता
क्या कहें.....??
समा रही थी जब जानकी
सतीत्व के एक सवाल में
धरती फट गई लज्जित हो
सती समा गई काल में
क्या कहें...??
चौसर में वह बिछ गई
एक हास्य अपराध में
बना दिया औरत को वस्तु
कर चीरहरण एक दांव में
क्या कहें...??
अपहृत हुईअंबाअंबालिका
एक भरे पुरे साम्राज्य में
कितनी ही ऐसी सच्चाईया
भरी हुई है इतिहास में
क्या कहें....??

इसे पुरुष की पौरूषता कहूं ??
या स्त्री गुलामी की पराकाष्ठा??
आज भी कहीं-कहीं दबी हुई है
स्त्री की अनकहीअनसुनी दास्तां
क्या कहें....??
निरुत्तर मैं..
निरुत्तर समाज..
सदैव..... सदैव..... सदैव..

जल्लाद

एक हवस की शिकार...
या तेजाब पीड़िता ....
जब
कोख से एक नन्ही..
कोख जनती है...

दर्द का सैलाब लिए ..
असह्य पीड़ा से चित्कार उठती है
फिर एक बार ...
एक ....वीभत्स....दर्दनाक ...
रक्त रंजित ...चलचित्र ...
उसकी आंखों में गुजरने लगता है.
मां बनने का एहसास लिए
पल-पल वह मरती है...
दर्द कुंठा से ग्रसित ...
उसके बड़े ना होने की मन्नत करती है,
आंखों से पल भर भी न किंचित दूर करती है,

पर दिल की वितृष्णा उसे दर्द भरी फरियाद नहीं ...
फौलाद बनाना चाहती है,
कोई हवस का कीड़ा ...
जो ...रेंगे ...बदन ...पर उसके
लहूलुहान कर दे उसे
ऐसी जल्लाद बनाना चाहती है

सृजन

मैं सृजन हूं,
सृष्टि से ऊपजी
सृष्टि के विधाता ने रचा है

मुझे ..रचने एक इतिहास
मेरी शुक्ष्म से स्थूल काया..
परिणाम है उसका,
मैं मूर्त रूप से.
अमूर्त कल्पनाओं को साकार करती,
लिखती हुं अपनी ही जीवनी ..
जन्म देकर नए जीवन को..
जैसे कुम्हार गढ़ता है ..
माटी को.

जीवन परिचय

डॉ. संगीता मनीष बनाफर

नाम : डॉ. संगीता मनीष बनाफर
पति का नाम : श्री मनीष सिंह बनाफर
शिक्षा : स्नातकोत्तर अंग्रेज़ी साहित्य, डिप्लोमा इन फाइन आर्ट्स, विद्या-वाचस्पति (मानद-पी. एच. डी.) वाराणसी
अनुभव : व्याख्याता, असिस्टेंट प्रोफेसर कॉलेज नवागढ़
वर्तमान : अध्यक्ष छत्तीसगढ़ शैक्षणिक प्रकोष्ठ विश्व हिंदी परिषद नई दिल्ली भारत
लेखिका, समाज सेविका, वक्ता, गीतकार
महासचिवः विश्व हिंदी रचनाकार मंच
अध्यक्ष : अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच
जिलाध्यक्ष : शहर समता विचार मंच प्रयागराज
उपाध्यक्ष : विश्व हिंदी रचनाकार मंच
सोशल : महासचिव इनरव्हील क्लब बिलासपुर
प्रमुख सम्मान : साहित्य...
एक्सीलेंट लेडी अवार्ड : अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच
छत्तीसगढ़ साहित्य रत्न सम्मान : विश्व हिंदी रचनाकार मंच
अटल हिंदी रत्न सम्मान : काव्य अमृत महोत्सव भोपाल
अमृता प्रीतम मेमोरियल अवार्ड : अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच - जयपुर
कवि रत्न नीरज सम्मान : विश्व हिंदी रचनाकार मंच- रायपुर
इंडियन आईकॉन अवॉर्ड 2022 : एडवांस ग्रोथ लर्निंग
इंडिया दिवा अवार्ड : दीवा प्लेनेट पब्लिकेशन आफ क्रॉउन टाइम 2024
हिंदी गौरव सम्मान : विश्व हिंदी रचनाकार मंच
ग्लोबल आइकन अवार्ड 2025- ग्लोबल आईकॉन इंडिया मैगजीन
अब्दुल कलाम एक्सीलेंस इंटरनेशनल अवार्ड 2025- अब्दुल कलाम एजुकेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट काउंसिल
साहित्य रत्न सम्मान 2025 पर्यावरण एवं पर्यटन विभाग
समाज सेवा : बेस्ट इंटरनेशनल सर्विस ऑर्गेनाइजर इनरव्हील डिस्ट्रिक्ट 326 पुरी उड़ीसा
प्रकाशन : 'संगिनी' (2022), 'आर्यवीरा-बस और निर्भया नहीं'(2022),'विकलांग विमर्श- एक अनुशीलन' (2023)
प्रमुख साझा संकलन : अमृता प्रीतम मेमोरियल काव्य संग्रह, छत्तीसगढ़ के मोती-मगसम, मां -मगसम , छत्तीसगढ़ नारी गौरव, भारत के कवि एवं कवित्रीयों, विश्व समन्वय साहित्य पत्रिका, अटल स्मृति काव्य संग्रह, महादेवी वर्मा काव्य संग्रह नीरज स्मृति काव्य संग्रह , तथा अन्य कई...

कविताएं

और सौंप देता है गैरों को... और...
लेने वाले की पारखी नजर .. क्या कहने!!!
जरा भी चूक हुई ..
मटकी चटकी, तो हो गई बेमोल....
क्या गुजरती है.. पूछो उस कुम्हार से.
और मटकी की...
अनहद नाद...किसने सुनी...
सदियों से चली आ रही यह प्रथा...
जीवन नाम है इस
अनवरत प्रकिया का...
हां मैं सृजन हूं..
रचती हूं जीवन।।

बेटी भ्रूणहत्या

ना कूरेदो मेरे लहू को एक कराह उठती है..
न छेड़ो मेरे अस्तित्व को दिल सेआह उठती है ..
हूं तप्त धरा अंगारों सी आग धधक रही..
ना कुचलो मेरे सपने जीने की चाह उठती है ..

अभी तो मैंने सिर्फ लहू का रंग देखा है ..
ना देखी है दुनिया, ना उसका ढंग देखा है ..
आने वाले कल की मैं भी 'मां' की तस्वीर हूं
पर शायद मेरे हाथों में नहीं बनी जीवन रेखा है
बस एक फरियाद है.....

नन्हीं हथेलियों में .. कुछ सपने तो भर लेने दो
अपने घर की दहलीज में .. कुछ पल तो ठहर लेने दो
मां का दीदार ..जी भर के तो कर लुं
मरने से पहले ..कुछ पल... तो जी लेने दो
कुछ पल ...तो जी लेने दो

नारी शक्ति

आज तू बिगुल बजा, और
शंखनाद कर,
नेतृत्व बदलना है तुझे, नई सुबह
का आगाज कर,
जय घोष कर, तिलक लगा, हाथ में
मशाल ले
स्त्री शक्ति का झंडा, लहरा दे
आसमान पर
स्त्री तुम सदा से, शक्ति का
स्वरुप हो
तुम ही मां, तुम ही ममता ,तुम ही
चंडी का रूप हो
खड्ग, खप्पर, त्रिशूल सजता है
तेरे हांथ में
नर मुंडो की माला, पहने हैं तू
साथ में
ए पुरुष..हैवानियत की हद को ना
लांघना
रक्तबीज बन, सर काट रखेगी
हांथ में
युद्ध में जब-जब, पराजय की बारी
आई है
रणचंडी बन, विजय का बिगुल
बजाई है, और..
आज भी नारी, हर क्षेत्र में
तैयार है
धरती से अंतरिक्ष तक गूंज
रही
उसकी जय जय कार है
वात्सल्य से वृक्ष तक, उसके
अनेकों रूप है
परिवार की धुरी के संग, विश्व में नया
स्वरूप है
आज की नारी, सिर्फ एक परिवार
नहीं
विश्व का कल्याण कर
सकती है
वह अकेली नहीं, दुर्बल
नहीं
साथ में, संपूर्ण नारी
शक्ति है।।
बस.. मौन हो जाना सखी..

जब कलह वेदना जीवन को, पीर बन..
डहने लगे
दर्द बेसबाब हो, नीर बन ..
बहने लगे
शब्द अर्थ खोकर, टुकड़ों में..
बंट जाए

बस..मौन हो जाना सखी ..

अपने ही अपने तरकस में, बाण जब..
कसने लगे
व्यंग जब तीर बन, कानों में ..
डंसने लगे
संवेदनाएं जब तार-तार..
हो जाए

बस.. मौन हो जाना सखी...

मन जब मन को, पढ़ने लगे..
तो मौन है
मन जब मन को, गढ़ने लगे ..
तो मौन है
मन मंदिर मन मूरत, लगने लगे..
तो मौन हैं
मन सतत विजयपथ, चढ़ने लगे ..
तो मौन है

अंततः ..मन मलंग की सुध ले
बस... मौन हो जाना सखी ....

नारायणी

क्यों ना आज हम खुद को गुनगुनाए
अपने ही इंद्रधनुषी रंगों से खुद को सजाएं
पहचाने ईश्वर की सबसे सुंदर कृति नारी को
नारीत्व का सम्मान दें, नारायणी कहलाए

आओ नारायणी बन जाए....

मन के भीतर करें धारण स्वर्ग
तन का कोना कोना प्रेम से महकाएं
मर्यादा की सिंदूरी चुनर ओढ
उन्मुक्त गगन में पंछी बन उड़ आए

आओ नारायणी बन जाए.....

आंगन में सजे बन पावन तुलसी
धानी रंग से धरा को सजाएं
श्रद्धा के दीप जलाकर हाथों में
सृष्टि का कोना कोना रोशन कर जाए

आओ नारायणी बन जाए.....

धरती सी धैर्य धारण कर
सरिता सी स्नेह बहाएं
नारायण भी हम पर गर्वित हो
ऐसे नारीत्व का मान बढ़ाएं

आओ नारायणी बन जाए....

संचय

अब और मैं क्या करूं संचय
अथाह प्रेम है जब मेरे हृदय
मैं प्रियतम की आली सखी
प्रिय हृदय ही मेरा शिवालय

अब और क्या करूं संचय .....

मुझमें हैं वो ....या उनमें मैं
आच्छादित है प्रणय ही प्रणय
जीवन सुगंधित मधुबन है
आल्हादित है मन का देवालय

अब और क्या करूं संचय ...

रक्त प्रेम का है अभिसिंचित
शैशव आंचल में है किसलय
अमृत प्रेम का पी लिया
हो प्रेममय जीवन का विलय

अब और क्या करूं संचय.....

व्यथित प्रेम

आज प्रेम क्यों व्यथित है
क्यों हैं आंखें भरी हुई
क्यों चिंता का भार उसे
क्यों है भृकुटी तनी हुई.. ??

प्रेम क्यों विलुप्त हो रहा
क्यों हृदय में संताप है
क्यों मलिन हुई गरिमा
किसका यह अभिशाप है..??

कौन बंदी बना लिया
प्रेम के अनुभूति को
कौन कलंकित कर रहा
प्रेम के पावन प्रीति को..??

ए युगो युगो की प्रेरणा
पल भर का स्वांग हो गई
जो मन से मन का मेल था
तन का संवाद हो गई

ढूंढे प्रेम हम राधा कृष्ण सा
जहां प्रेम चिर-समर्पण है
गढे प्रेम हम अंतःकरण में
प्रेम, मन से मन का अर्पण है

बेटी तुम्हें नमन

माथे में दमके जिनके शौर्य, वो ज्वाला हो तुम
गढ़ना है जिनको नव भविष्य, वो वीर बाला हो तुम
प्रीत, मीत, गीत बन, सुरभित जैसे सुमन, सुमन
सरल, सहज, सतत-सृजन, तुम्हें नमन, तुम्हें नमन

तुम जानकी, जान्हवि तुम जननी का स्वरूप हो
मां, बहन, बेटी, पत्नी, बस प्रेम का तुम रूप हो
श्रद्धालु ऐसी हो, लहू से सींचती, चमन, चमन
सरल, सहज, सतत-सृजन, तुम्हें नमन, तुम्हें नमन

आंचल तेरा विशाल, धैर्य धरती के समान है
इंसान क्या देवता भी, तेरे त्याग से हैरान हैं
मां बना के ईश्वर भी करते हैं तुम्हे नमन, नमन
सरल, सहज, सतत-सृजन तुम्हें नमन तुम्हें नमन

तुम ही लक्ष्मी बाई, तुम ही पन्ना धाय का त्याग हो
तुम ही हाड़ी रानी, तुम ही पद्मावती का चिराग हो
तुम ही नवोदित सूर्य की, नित नई किरण किरण
सरल, सहज, सतत-सृजन, तुम्हें नमन, तुम्हें नमन

बेटी को शास्त्र संग शस्त्र दो

ना जिस्म छलनी होगा
ना बेमौत मरेगी
अगर कन्या शिक्षा में
तलवारबाजी शामिल हो
तो मेरे देश की हर बेटी
वीरांगना बनेगी...

सिंहनी सी पालो उन्हें -
अस्त्र शस्त्र का ज्ञान दो
वह लक्ष्मीबाई बन दहाड़ेगी
उनके रक्त को उबाल दो...

वह कोमल हृदय अबला नहीं
उसको फौलाद बन जाने दो
नया इतिहास स्वयं रचेगी
उसे विजय तिलक लगाने दो..

छलनी छलनी देख उन्हें
कब तक आंखें रोएगी
रक्तरंजित जीवित लाशें
कब तक खामोशी ढोएगी

बहुत बह चुकी रक्त की नदियां
बहुत बेमौत मर गई
बहुत झुलस गई तेजाब से
बहुत, बैठी खामोश, डर गई ..

वक्त है स्वरक्षिका बनने की
वीरांगना बन चिंघाडने दो
अब बेटी को शास्त्र संग शस्त्र दो
तलवार उठा धड़ काटने दो।।

अग्नि परीक्षा

मां सीते....
अपूर्व सुंदरी,आज्ञाकारी
सुसस्कृत, संस्कारी थी
शांत सरोवर सरिता सी
जनक की राज दुलारी थी

राम के प्रेम में वन वन भटकी
जीवन सर्वस्व पति पर वारी थी
रावण परछाई भी छू न सका
ऐसी शक्तिस्वरूपा नारी थी

प्रश्न उठाया जब जनता ने
विडंबना विकट भारी थी
राम व्यथित थे प्रश्नचिन्ह से
अग्नि परीक्षा की तैयारी थी

सीते बोली... हे स्वामी,
आप व्यथित ना हो
राजवंश पर आंच ना आने दूंगी
मैं भूमि पुत्री भूगर्भ में समा
प्राण अभी तज दूंगी

भूल हुई थी मुझसे
मैं स्वर्णमृग के पीछे भागी थी
समझ ना सकी छलावा
लक्ष्मण रेखा लांघी थी

तुम त्रिलोक रक्षक राम हो
मैं राघव प्रिया कहलाऊंगी
जितने बार भी जन्म लूं
तुम्हारी सीते बन कर आऊंगी

समाज के प्रश्नचिन्ह तो युगों से
स्त्री का सांसारिक न्याय है
किंतु अग्निपरीक्षा तो तुमने ली
अब ए तन मन तो मृतप्राय है

पतिव्रत धर्म का निर्वाह कर
मां सीता भूगर्भ में समा गई
अधरों में था राम-राम
अंतर्मन की व्यथा छिपा गई
अंतर्मन की व्यथा छिपा गई।।
जीवन जय या.. मरण

राष्ट्रधर्मिता कि यदि बात हो
सरहद के सिपाही पर आघात हो
तो क्षमा याचना नहीं - रण चाहिए
सरपरस्ती का अटल प्रण चाहिए

देश की प्रजा प्रबल-प्रखर कुंदन है
देश पर न्योछावर तन मन धन है
पथ कंटको की परवाह नहीं
वीर शहीदों सा मृत्यु वरण चाहिए

हम हंसकर शूलों पर चढ़ जाएंगे
आंधी हैं - हर तूफां से टकराएंगे
हम अमर शहीदों की आह्वान है
हमें जीवन जय या मरण चाहिए

हम सत्य सनातन धर्म के पुजारी हैं
राष्ट्रअस्मिता हेतु कृपाण है कटारी है
पाश्चात्यसभ्यता का अनुकरण नहीं
भारतीय संस्कृति का अनुसरण चाहिए

जीवन जय या.. मरण चाहिए
क्षमा याचना नहीं -रण चाहिए।।

चीखती..गूंज ..

कहां महफूज हूं मैं??????????
घर की दहलीज ...?
चार दिवारी... ?
रिश्तेदारों की पहरेदारी..?
भीड़ या बाजारों में ..?
या ...
वह जगह बता दो ..
जहां पुरुष नहीं .....
वह युग बता दो
जहां मैं लूटी नहीं ....
द्रोपदी परिवार में ...
नगरवधू दरबार में...
और जाने कितने रिश्तो के व्यापार में,
कुछ उजागर हुए ..
कुछ छिपा दिए गए परिवारों के संस्कार में ...
और आज भी समाज रावण के पुतले जलाता हैं!
छोड़ दो यह प्रथा..
सजा दो- ...उन दरिंदों को...
जो अपनी मां का खून ..
कलंकित करते हैं ..
या तो अपनी बेटियों को बनाओ वीरांगना ...
चीर दे उन्हें तलवार से .....
या इन दरिंदों को
जला दो बीच बाजार में...

अस्मत

वह अनपढ़ स्त्री ..
ईश्वर की एक नायाब कारीगिरी ...
पर ...
हालात की मारी थी,
अपनी उन्मुक्त हंसी से..
मन की कुंठा छिपा रही थी,
आंखों के आंसू पीकर ...
खिलखिला रही थी,
अपनी अदाओं से ...
जख्मों में मरहम लगा रही थी,
वह खुद को बेच कर ..
बेटी पढ़ा रही थी,
ताकि बेटी को ....
कभी पैसों की ..
मोहताज ना होना पड़े,
उसे अपनी औलाद को पढ़ाने.....
अपनी.. अस्मत
न खोना पड़े।

तू श्रेष्ठ है ...

तू नवयुग काआह्वान है, नवल विधान बनकर जी
तू राष्ट्रध्वज की शान है, तू शान बनकर जी

सुन ले तू वो धुन, जो गूंजे क्षितिज के पार से
कर ले जय अपने जीवन की, कर्म के के श्रृंगार से

वक्त नहीं अब जाग जा, कर सृष्टि का उपकार तू
झुम के अब हो के गर्वित, जा शिखर के पार तू

तू स्वयं अभिमान है, अभिमान बनकर जी
तू राष्ट्रध्वज की.....

सृष्टि पुलकित हो रही, तेरे ही तो इंतजार में
पंथ बिंधे कंटको को, फेंक दे धिक्कार के

अब तो तू संकल्प लें, और, नित नई बुनियाद रख
छोड़ दे सुख का बिछौना, एक नया इतिहास रच

तू ईश्वर का वरदान है, वरदान बनकर जी
तू राष्ट्रध्वज.....

तेरे ही तो पद चिन्हों को, इतिहास कल दोहराएगा
तेरे ही तो गीत को, कल बच्चा-बच्चा गाएगा

सृष्टि के निर्माता का, निर्माण तू सर्वश्रेष्ठ है

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह
चंडीगढ़ ट्राई सिटी - प्रभजोत कौर
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
बैंगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती
गोंडा ब्यूरो - विभा श्रीवास्तव
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पंलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

डॉक्टर संगीता बनाफ़र अंक

साप्ताहिक शहर समता

कविताएं

तू श्रेष्ठ ..तू श्रेष्ठ है.. तू श्रेष्ठ है ..तू श्रेष्ठ है
तू ही तो हिंद की शान है, हिंदुस्तान बनकर जी.

तू राष्ट्रध्वज की ..

तू राष्ट्रध्वज की ..
तू नवयुग का...
इंसान बन जाएं

इस गणतंत्र कुछ नया
इतिहास रच जाएं
लगाकर धरती की रज माथे पर
मां भारती की संतान बन जाए

विधाता ने रचा है जिस मकसद से हमें,
वह विधान बन जाए
सामाजिक छद्मवेसी
कुंठित विकृत मानसिकताओ का
विराम बन जाए।।

आती है आपदाएं तोआए
हो प्रलय की घोर घटाएं
सिसकती हो रातें
या ..
दम तोड़ती हो आशाएं
भूलकर. सारी समस्याएं
किसी और का समाधान बन जाए।।

ना स्वार्थ रहे न रुदन रहे
सृष्टि में सिर्फ प्रेम का सृजन रहे
हर दिल में हो प्रेम की ज्वाला
हर आंगन में दीपों का सतत प्रज्वलन रहे
नव वर्ष में नवचेतना लिए
नव युगनिर्माण बन जाए।।

आओ ना एक बार इंसान बन जाए...

संदेश ..

एक दूजे के दिलों में, घोल दो प्रेम के रंग
ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष सब, रंग जाए एक रंग
अहिंसा की परिणीति नहीं, प्रेम का परिवेश हो
द्वंद बस अब और नहीं, शांति का संदेश हो।।

मैं मैं नहीं, तुम तुम नहीं, बन जाए केवल हम
एक गगन, एक धरा, एक लहू, एक वतन
शायद हम ही हैं, जो बांटते यह दरो दीवार
प्रकृति की उत्पत्ति तो, केवल स्त्री पुरुष प्रथम।।

प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारा, सब है एक समान
फिर कैसी उंच-नीच, कैसा मान-अपमान
सफर वही, डगर वही, मंजिल भी वही
फिर क्यों रखते हम, अपनी अपनी जेब पर म्यान।।

बस..अब ना हुकूमत हो, ना सियासत हो
देश के हिफाजत की ज़िद, और इंसानियत हो
सलामत रहे हम, सलामत रहो तुम
दफना दो नफरतों को, अब सिर्फ मोहब्बत हो।।

एक अर्जी हमारी...

पढ़कर रामायण, गीता,
हम समझे जीवन का सार
देखी देवों की महिमा
कैसे किया उद्धार ।।

कैसे उस युग में ..
कृष्ण अवतरित हुए,
किया द्रोपदी का चीर विस्तार..
मां सीताहरण की कठिन बेला में
श्रीराम ने भस्म की लंका कर
रावण संहार...

आज बड़ी है विडंबना !!

जाने कितनी द्रोपदिया लुट रही..
जाने कितनी सीता हुई हरण..
कितने माटी में समा गईं..
कितनो का गूंज रहा रूदन.।।
हर ओर दुस्सासन बैठे है..
चौसर पे है बिछी फिर नारी
पाप, अधर्म, हिंसा में लिप्त
छद्मवेश की शेषनाग पर बैठे ब्याभिचारी.।।

ओ रामायण और गीता के कथासार..
हमारे विश्वास के प्रमुख आधार..
फिर ढूंढ रही है नजरे तुम्हे
केवंट की नाव लगाओ पार।

हे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
हे यशोदा नंदन श्री श्याम
अब तो ..न ..देर लगाओ.....
है अर्ज तुम्हे ...
फिर से धरती पे जन्म लो
या
देवलोक से आओ।।

पूर्ण विराम

घंटों ..
पूर्ण विराम..'।'..
को तकती ..ढूंढती हूं
उसमें छुपा गूढ़ रहस्य!!!

पूर्ण विराम.. प्रारंभ है ...??
प्रारब्ध है.... ??
या अंत ...??
मैं निरुत्तर निशब्द .., निरंतर.. उस निराकार में
ढूंढती हूं एक आकार...
यह विश्राम है ..??
परिधि है ..??
या विस्तार ..??
और जिंदगी इस पार है..??
या उस पार....??
और इस निष्कर्ष पर
पहुंचती हूं ..
कि ....विराम ही
हमारी जीवन की सीधी सरल रेखा.. है
जिसमें समाहित
जाने कितने....
प्रश्न चिन्ह.....???? और अल्पविराम.... ,,,,,
जो अनसुलझा ..अनदेखा है ...

पूर्ण विराम ...
जिसके दूसरी ओर
सिर्फ शुन्य ...
सिर्फ निर्विकार है...
और यही शायद
जीवन का मूल आधार है....

टूटते तारों.....

टूटते तारों से मैंने गुजारिश की है
सांसे न टूटने देना ए ख्वाहिश की है
अब जा के ए समझे की जिंदगी है लाजवाब
चुकाने है अभी जिंदगी के कर्ज बेहिसाब
दिल ने फिर से जवां होने की सिफ़ारिश की है
टूटते तारों से.....

अब तक तो जीए दंभ, स्वार्थ, मोह, लोभ में
तोड़े है कितनो के दिल क्रोध और क्षोभ में
पोंछ ले किसी के आंसू एअहसास ही ना था
बस खुद में ही गुम थे कोई तलाश ही ना था
जिंदगी के छोर ने अंतिम समझाइश दी है
टूटते तारों से.....

ए जिंदगी बस कुछ पल तू और ठहर जा
चुका ले ने दे कर्ज मां के दूध और धरती का
सुबह के भूले को घर लौट आने दे
मदमस्त नशे में चूर को कीमत चुकाने दे
कदमों ने फिर से.. जोर आजमाइश की है

टूटते तारों से.....

आंचल

ए मां मुझे एक बार फिर सीने से लगा ले
आंचल की हवा दे मुझे फिर लोरी सुना दे

तू जानती मेरी जिंदगी का सार तू ही है
जन्मो जन्म का मैंने प्यार भी पाया तुझी से है
मेरे मंदिर की बन मूरत मेरा संसार सजा दे
आंचल की हवा दे....

मां बन के ये जाना कि मां तू भी तो थकती थी
तुझे भी एक मां के, गोद की कितनी जरूरत थी
मेरी गोदी में रख के सर तू हर दर्द भुला दे
आंचल की हवा दे.....

मां तू ही तो कहती थी, मेरी सांसे तुम्हीं से है
मेरे दिल की हो तुम धड़कन यह दिन रातें तुम्हीं से है
मां गर गलती हुई मुझसे तो फिर आके तू सजा दे
आंचल की हवा दे.....

मां वादा हैअब तुझसे तेरी हर बात मानूंगी
तेरी बेटी हूं, तेरे पद चिन्हों में चल कर दिखाऊंगी
अभी छोटी हूं, बस एक बार सही राह दिखा दे....
आंचल की हवा दे.....

त्रिशूल

नियति की विडंबना कहें
या मानवों की भूल
प्रकृति साथ ले उड़ी,
ख्वाहिशों की धूल

कैसे कलम संधि करें,
जब शब्द बने शूल
वेदनाओ में बिखर गए,
भावनाओं के फूल

मानव और दानव में,
फर्क नजर आता नहीं
चंद सिक्के लीलते,
इंसानी उसूल

आज भी मेरे देश की रज -देवरज भूमि -देवभूमि
और वेदों से उत्थान है
पर यह विडंबना है कि
आज मानव को मानव की नहीं पहचान है
दानव दृष्टि के आगे
मानव हो न जाए निर्मूल
अब तो देवता आ जाओ लेकर हाथ में त्रिशूल

मैं बेरंग नहीं.....

जब भी जमाना मुझसे ...
पूछे मेरा हाल..
बस तुम चले आना..
मेरे हृदय पटल की ..
धमनियों के बहते लहू संग..
नब्ज में उतर..
उंगलियों के सहारे ..
सुर्ख लाल रंग में ...
भर देना मेरी सूनी... मांग...
कर देना मेरा सोलह श्रृंगार ...
मुझे पता है तुम
अब भी मेरी रूह में,
शामिल हो ..
हमखयाल.. हमसफर बनकर ..
पर..
जमाने को खबर नहीं....
बता देना उन्हें.
मैं ङ बेरंग नहीं ..
तुम रंग भरते मुझ में
बनकर..
सुबह की लाली ...
सिंदूरी शाम....
मेरी अमावस की रातें करते पूनम,
मुझे प्यार से ..
अपनी बाहों की सरजमीं का सहारा देते ...
बनके मेरा ...
अंतहीन प्यार ..
प्रतिपल...प्रतिक्षण.....
समेटते ...सहेजते....
देते मुझे ....
इंद्रधनुषी रंग ....

मैं और प्रकृति.....

प्रकृति..पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश...
हां यही पंचतत्व है जिससे प्रकृति बनी है,
और यही पंचतत्व तो समाहित है मुझमें..
मैं धरा सी धैर्यवान, निर्मल जल सी निश्छल,
अग्नि सी तेज, हवा सी चंचल,
और आकाश सा विशाल हृदय ...

..मैं धरा हूं
जैसे धारण किया है धरती ने विश्व को..
धारण किया है मैंने गर्भ में शिशु को
पल्लवित किया है,
जैसे धरती ने अनाज के भंडार खेतों को,
मैंने भी सींचा है अपने लहू से
आंचल के दुध से, खून पसीने से,
भारत के भविष्य को!!!

धरती की तरह
सब को पनाह देती
सब कुछ सहती,
खामोश रहती,

मैं उदास हो जाती हूं पल भर को
यह सोच के
कि...एक घर से ब्याह के
दूसरे घर आई..
पर दोनो घर की जमीं मेरी न कहलाई...
पर दूसरे पल ही, सोच कर हंस पड़ती हूं,
मेरे हिस्से में
टुकड़ों में बंटी धरती नही...
संपूर्ण धरती आई
इसलिए मैं 'स्त्री' भी
'धरती मां' की तरह
'मां' कहलाई!!!

शब्द

शब्द सार्थक..
शब्द निरर्थक ..
शब्दों का ही खेल है
शब्द ही बताते मनोभाव
शब्दों से ही मेल है,

शब्दों की सुंदर श्रृंखलाएं ही
परिधान है व्यक्तित्व का
शब्द अमर ..शब्द अटल ..
पहचान है अस्तित्व का,

इतिहास के स्मृति पटल में
इसका बखान है ..
शब्द कलंकित हुए तो ..
साहित्य का अवसान है...

यह अनमोल खजाने हैं ...
जो कभी खत्म नहीं होते है,
और जिन्हें मिल जाए यह खजाने
वह साहित्य के रत्न होते हैं.

युद्ध का परिणाम???

युद्ध तो समाप्त होगा,
अंतिम सोपान पर
नेताप्रमुख के हाथ मिलेंगे,
जीत के सम्मान पर।

विजय के उल्लास में,
विजय पताका फहर जाएगा
किसी को राजपाट मिला,
तो कईयों का घर बिखर जाएगा।

महलों में जलेंगे दीपक,
शमशान आग से धधकेंगे
कहीं होंगी दावतें,
कहीं खाली चूल्हे सिसकेंगे।

युद्ध के दौरान,
बहुत कुछ बिखर जाएगा
किसी के पिता, किसी का भाई
किसी का शौहर बिछड़ जाएगा

युद्ध के परिणाम में जीतने वाले
ताउम्र उत्सव मनाएंगे
जिसने अपनों को खो दिया,
ताउम्र कीमत चुकाएंगे।

युद्ध का यही परिणाम है,
तो कैसा यह परिणाम है????
क्या युद्ध कानूनीअपराध नहीं ??
जो अनगिनत मौतों का प्रत्यक्ष प्रमाण है

बेटी...

मैं उस देश की बेटी हूं -जहां देवी पूजी जाती है
मैं उस देश की बेटी हूं -जहां कन्या खिलाई जाती है
मैं उस देश की बेटी हूं- जहां झांसी की रानी पलती थी
मैं उस देश की बेटी हूं -जहां मदर टेरेसा जन-जन की
सेवा करती थी

पर भाग्य की विडंबना ...
मैं उसी देश की बेटी हूं --जहां कोख में बेटी मरती है
मैं उसी देश की बेटी हूं --जहां अक्सर बेटी जलती है
मैं उसी देश की बेटी हूं जहां-- अस्मत लूट ली जाती है
बेटा ना हो तो घर से पत्नी निकाली जाती है
पर बस ....
अब और नहीं.....

बहुत पूजलिए देवी देवता, अब उसका अवतार बनो
तीर बनो भाला बनो और तेज तलवार बनो
छू ले कोई बेटी को तो दुर्गा का अवतार बनो
शाश्वत शक्ति हो तुम... स्वयं.. दुश्मन का संहार बनो

ऑपरेशन सिंदूर

भारत के नेतृत्व ने ,
प्रमाणित कर दी ..
अपनी श्रेष्ठता,
शीर्षपुरुष की
राष्ट्रभक्ति में
है कितनी पवित्रता,
ऑपरेशन सिंदूर के
सिंदूरी रंग से..सज उठा
मां भारती का दिव्य ललाट,
सैन्यबल का शौर्य
बोल उठा
'जय-हिंद'था
'जय-हिंद' है
' जय-हिंद' रहेगा.
विश्व हृदय सम्राट।।

गुंजायमान हुआ
शंखनाद,
घर-घर दीप प्रज्वलित हो उठे ,
युद्ध लक्ष्य था प्रबुद्ध..
विशुद्ध भाव ..
परिष्कृत हो उठे,
विश्व में परिलक्षित हो गया..
मेरे राष्ट्र का हृदय विराट,
'जय-हिन्द' था
'जय-हिन्द' है
' जय-हिंद' रहेगा ..
विश्व हृदय सम्राट।।

क्रांति के अग्रदूत

इक्कीसवीं सदी बनाम
उज्जवल भविष्य की राह में
सर उठाते अवरोध,
बलवान होती बलाएँ,
प्रत्येक धड़कन की..
संवेदन और स्पंदन को
अपने स्पर्श से जड़ बनातीं...
राक्षसीय गतिविधियाँ,
जिसकी कार्यविधि
प्रत्येक स्तर पर..
बुद्धि व्यवहारगत विभाजनों,
विद्वेषों, संप्रदायों,
जातियों, वर्गों में
मानवीय संवेदनाओं को
पूर्ण विकास की गर्त में धकेलती ।

समाधान भी दृश्य हैं

भारत की पुण्य भूमि में जन्मे
संस्कारवान, सुसंस्कृत
संत पुरुष जो
अपनी आध्यात्मिक शक्तियों
के प्रकाश पुंज से
नेस्तनाबूद करते
हर दुश्वारियां,
वे संत शिरोमणि ही है
विप्लवकारी ..
क्रांति के सच्चे अग्रदूत।

विरासत

.अक्सर,
पिता के मरने के बाद
पुत्र से पूछे जाते हैं
यह सवाल कि,
आपको विरासत में क्या मिला?
अचंभित मैं...
स्वयं से करती सवाल,
विरासत क्या है?
भौतिक संपदा?
सामाजिक प्रतिष्ठा?
आर्थिक समृद्धि?
प्रसिद्धि?
या.....
हमारी सभ्यता?
संस्कृति?
संस्कार?
मानवी संवेदनाओं से
अथक प्यार?
निरुत्तर मैं...
देख सामाजिक व्यवस्था
व्यक्तित्व परिशोधन की
लगाती हूँ अनसुनी गुहार।